समर्पण

उस असीम वात्सल्यमयी जननी
माता श्रीमती विजय लक्ष्मी एवं
आदर्शों की प्रतिषृंखला मेरे श्रृद्धार्पद
परम पूज्य आदरणीय पिता
श्री सुदर्शन सिंह को
जिन्होंने अंगुली पकड़ कर चलना सिखाया,
कठिनताएं में भी मुस्कराते रहना
जिनका मूल स्वभाव है।
जब कभी अपने आपको अकेला पाया
आपका वात्सल्यमय आशीर्ष
सदैव प्राप्त हुआ।
आप श्रृद्धार्पद जननी जनक के चरण कमलों में
यह कृति सादर समर्पित है।

आपका चरण किंगर

प्रवीण